بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصار اللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-25.08.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

तौबा एवं इस्तिग़फ़ार का महत्त्व।

सारांश ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 25 अगस्त 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- अल्लाह तआला अपने बन्दे के इस्तिग़फ़ार एवं तौबा को क़बूल करने वाला है किन्तु शर्त यह है कि वह सच्ची तौबा हो, केवल मुंह से शब्द ही अदा न हो रहे हों। क़ुर्आन करीम में विभिन्न स्थानों पर इसका वर्णन हुआ है कि अल्लाह तआला सच्ची तौबा क़बूल करने वालों को माल तथा औलाद प्रदान करता है तथा यह अल्लाह के प्रकोप से बचाने का एक माध्यम है।

इस्तिग़फ़ार करने वाला अल्लाह तआला की दया को ग्रहण करने वाला बनता है। एक जगह अल्लाह तआला ने इस्तिग़फ़ार करने वालों को शुभ सूचना देते हुए फ़रमाया कि لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا वे अवश्य ही अल्लाह को अति क्षमाशील तथा बार बार दया करने वाला पाएँगे किन्तु शर्त यही है कि वास्तविक इस्तिग़फ़ार एवं सच्ची तौबा हो।

एक हदीस में हज़रत अनस रज़ी. से रिवायत है कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि पाप से सच्ची तौबा करने वाला ऐसा ही है जैसे उसने काई गुनाह किया ही नहीं। जब अल्लाह तआला किसी इंसान से मुहब्बत करता है तो पाप उसे कोई हानि नहीं पहुंचा सकते अर्थात पाप को प्रोत्साहन देने वाली उत्सुकता उसे बदी की ओर नहीं झुका सकती तथा बदी के परिणाम से अल्लाह तआला उसे सुरक्षित रखता है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तौबा की निशानियाँ बयान करते हुए फ़रमाया कि पश्चाताप एवं पशेमानी खेद की निशानी तौबा है। अतएव वास्तविक तौबा करने वाला जहाँ गुनाहों से पाक होता है वहाँ उसे अल्लाह तआला का स्नेह भी मिलता है तथा बार बार अल्लाह तआला के रहम से अंश प्राप्त करता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सच्ची तौबा की शर्तों के अंतगर्त फ़रमाते हैं कि पहली शर्त यह है कि तामसिक विचार एवं बुरी कल्पनाओं को छोड़ दे। दूसरी शर्त यह है कि वास्तवित पश्चाताप तथा खेद प्रकट करे। तीसरी शर्त यह है कि पक्का इरादा करे कि इन बुराईयों के निकट नहीं जाएगा और यहीं रुक नहीं जाना कि बुराईयों के निकट न जाने का संकल्प कर लिया और बस काफ़ी हो गया, बल्कि शुभ नैतिकता एवं शास्वत कर्म उसकी जगह ले लें। अतः यह है वास्तविक ताबा तथा वास्तविक पश्चाताप। जब यह अवस्था प्राप्त हो जाए तो फिर ख़ुदा तआला अपने ऐसे बन्दों से प्रेम करता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस्तिग़फ़ार और तौबा की ओर हमें बार बार ध्यान दिलाते हैं। आप अलै. को इतनी चिंता थी कि कोई अवसर ऐसा नहीं आया कि जब आप अलै. ने जमाअत को इस तरफ़ ध्यान न दिलाया हो। अतः हमारे लिए यह अति आवश्यक है कि अल्लाह तआला तथा उसके रसूल के आदेश तथा निर्देशों की रौशनी में बयान करदा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों को सदैव सम्मुख रख कर उनके अनुसार कर्म करने का प्रयास करें ताकि बैअत का वास्तविक हक़ अदा करने वाले भी बनें।

यदि हम अपने भीतर पाक बदलाव पैदा न करें और वास्तविक तौबा व इस्तिग़फ़ार की ओर ध्यान दें तो हमारा अपने सुधार का संकल्प करना हमें कोई लाभ नहीं दे सकता। आप अलै. फ़रमाते हैं कि ज़ाहिर है कि इंसान अपनी प्रकृति में अत्यंत दुर्बल है तथा ख़ुदा तआला के सैंकड़ों आदेशों का बोझ उस पर डाला गया है। अतः उसकी प्रकृति में यह दाख़िल है कि वह अपनी दुर्बलता के कारण कुछ आदेशों का पालन करने से वंचित रहे तथा कभी तामसिक वृत्ति की कुछ अभिलाषाएँ उस पर क़बज़ा कर लेती हैं। अतः वह अपनी कमज़ोरी तथा प्रकृति के अनुसार अधिकार चाहता है कि किसी ग़लती के समय वह तौबा व इस्तिग़फ़ार करे तो ख़ुदा की रहमत उसको नष्ट होने से बचा ले। इस लिए यह विश्वस्त सूत्र है कि यदि ख़ुदा तौबा क़बूल करने वाला न होता तो इंसान पर सैंकड़ों आदेशों का बोझ कदाचित न डाला जाता। इससे निश्चित रूप से प्रमाणित होता है कि ख़ुदा **तव्वाब एवं ग़फ़ूर** है तथा तौबा का यह अर्थ है कि इंसान एक बुराई को यह स्वीकार करके छोड़ दे कि इसके बाद यदि वह आग में भी डाला जाए तब भी वह पाप कदापि न करेगा।

अतएव यह शर्त है, ऐसी तौबा होनी चाहिए। अतः जब इंसान इस सच्चाई तथा सुदृढ़ संकल्प के साथ ख़ुदा तआला की ओर पलटता है तो ख़ुदा अपनी ज़ात में करीम व रहीम है, वह उस पाप के दंड को क्षमा कर देता है और यह ख़ुदा तआला के उच्चतम गुणों में से है कि वह तौबा को क़बूल करके नष्ट होने से बचा लेता है।

कुछ लोग कहते हैं कि हमने इतनी बार इस्तिग़फ़ार किया, सौ या हज़ार बार तसबीह पढ़ी किन्तु जब इस्तिग़फ़ार का मतलब तथा अर्थ पूछो तो हक्का बक्का रह जाएँगे। इंसान को चाहिए कि वास्तविक रूप से दिल ही दिल में माफ़ी मांगता रहे कि वे पाप एवं दोष जो मेरे द्वारा घटित हो चुके हैं उनका दंड न भोगना पड़े, वे माफ़ हो जाएँ तथा फिर दिल ही दिल में ख़ुदा तआला से हर समय सहायता मांगता रहे कि आगे से नेक काम करने का सामर्थ्य दे तथा अनैतिक कामों से बचाए रखे। केवल शब्दों से कुछ काम नहीं बनेगा। अपनी ज़बान में भी इस्तिग़फ़ार हो सकता है कि ख़ुदा तआला पिछले गुनाहों को माफ़ करे तथा आगे के गुनाहों से सुरक्षित रखे तथा

नेकी करने की तौफ़ीक़ दे, यही इस्तिग़फ़ार है। ख़ुदा तक वही बात पहुंचती है जो दिल से निकलती है, ज़बान तो केवल दिल की गवाही देती है। केवल ज़बानी दुआएँ व्यर्थ हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हमारी जमाअत को चाहिए कि कोई विशेष उदाहरण भी प्रकट करे। यदि कोई व्यक्ति बैअत करके जाता है और कोई विशेष कर्म नहीं दिखाता, अपनी पतनी के साथ वैसा ही व्यवहार है जैसा पहले था तथा अपने परिवार के साथ पहले जैसी अवस्था में ही पेश आता है तो यह अच्छी बात नहीं। यदि बैअत के बाद भी वही अनैतिकता तथा दुर्व्यवहार रहा तथा पहले जैसा ही हाल रहा तो फिर बैअत करने का क्या लाभ? चाहिए कि बैअत के बाद ग़ैरों को भी तथा अपने रिश्तेदारों एवं पड़ौसियों को भी ऐसा नमूना बन कर दिखावे कि वे बोल उठें कि अब यह वह नहीं रहा जो पहले था और यही वास्तविक इस्तिग़फ़ार का परिणाम होना चाहिए।

कुछ मूढ़ पादरियों ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस्तिग़फ़ार पर आपत्ति की है तथा लिखा है कि उनके इस्तिग़फ़ार करने से नऊज़ुबिल्लाह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पापी होना साबित होता है। ये मूढ़ नहीं समझते कि इस्तिग़फ़ार तो एक अद्भुत गुण है। इंसान प्राकृतिक रूप से ऐसा बना है कि कमज़ोरी एवं दुर्बलता उसके स्वभाव में है। नबी इस प्राकृतिक दुर्बलता तथा मानवीय कमज़ोरी से भली भांति परिचित होते हैं अतएव वे दुआ करते हैं कि या इलाही! तू हमारी ऐसी रक्षा कर कि वे मानवीय कमज़ोरियाँ घटित ही न हों।

कोई दावा नहीं कर सकता कि मैं अपनी शक्ति से पाप करने से बच सकता हूँ। अतः नबी भी सुरक्षा हेतु ख़ुदा क मोहताज हैं। अतः बन्दगी की अभिव्यक्ति के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी अन्य नबियों की तरह अपनी सुरक्षा ख़ुदा तआला से मांगा करते थे।

ईसाइयों का यह विचार ग़लत है कि ईसा अलैहिस्सलाम इस्तिग़फ़ार नहीं करते थे। इंजील से स्पष्ट रूप में ज्ञात होता है कि उन्होंने जगह जगह अपनी दुर्बलताओं को स्वीकार किया तथा इस्तिग़फ़ार भी किया। फ़रमाया- अच्छा भला बतलाओ कि **ऐली ऐली लिमा सबक़तानी** का क्या अभिप्रायः है? अबी अबी करके क्यूँ न पुकारा? इबरानी भाषा में ऐल ख़ुदा को कहते हैं। इसका यही अर्थ हुआ कि दया कर तथा कृपा कर तथा मुझे ऐसा सहायता से वंचित तथा साधन हीन न छोड़, अर्थात मेरी रक्षा कर।

हदीस में आता है कि इंसान ख़ुदा की ओर एक बालिश्त भर जाता है तो ख़ुदा उसकी ओर हाथ भी आता है, यदि इंसान चल कर आता है तो ख़ुदा तआला दौड़ कर आता है, अर्थात यदि इंसान ख़ुदा का घ्यान करे तो अल्लाह तआला भी रहमत, कृपा तथा मग़फ़िरत में अत्यधिक स्तर का उस पर फ़ज़्ल करता है। परन्तु यदि ख़ुदा से मुंह फेर कर बैठ जावे तो ख़ुदा तआला को क्या चिंता। क़ुर्आन शरीफ़ ने अल्लाह तआला के दो नाम पेश किए हैं-الحیّ اور القیّوم। अलह्यी का अर्थ है जीवित ख़ुदा तथा दूसरों को जीवन देने वाला तथा अलक़य्यूम का अर्थ है स्वयं स्थापित तथा दूसरों को क़ायम करने का मूल साधन। हर एक चीज़ का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष क़याम तथा जीवन इन्हीं दोनों गुणों के कारण है। अतः ह्यी का शब्द चाहता है कि उसकी बन्दगी की जाए जैसा कि इसकी अभिव्यक्ति सूरः फ़ातिहः में اِيَّاكَ نَعۡبُدُ से है और अलक़य्यूम चाहता है कि उससे सहारा मांगा जाए,

इसको اِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ के शब्द से अदा किया गया है। मानव को ख़ुदा की आवश्यकता हर अवस्था में रहती है इस लिए अनिवार्य हुआ कि ख़ुदा तआला से शक्ति मांगते रहें तथा यही मूल इस्तिग़फ़ार है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि सद्कर्म तथा इबादत में पूरी रूचि एवं लीनता अपनी तरफ़ से नहीं हो सकती, यह ख़ुदा तआला की कृपा एवं तौफ़ीक़ से मिलती है। इसके लिए आवश्यक है कि इंसान घबराए नहीं तथा ख़ुदा तआला से उसकी तौफ़ीक़ और फ़ज़्ल के लिए दुआएँ करता रहे। इबादत में रूचि एवं लीनता भी अल्लाह तआला से मांगे और इन दुआओं में थक न जाए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ख़ूब याद रखो कि अल्लाह तआला को छोड़ कर दवा एवं उपाय पर भरोसा करना मूर्खता है। अपने जीवन में ऐसा बदलाव पैदा कर लो कि मालूम हो कि मानो नया जीवन इस्तिग़फ़ार का जीवन है। इस्तिग़फ़ार को बढ़ाओ, जिन लोगों को सांसारिक व्यस्तता के कारण कम समय मिलता है उनको सर्वाधिक डरना चाहिए। नौकरी करने वाले लोगों से प्रायः अल्लाह के कर्त्तव्य छूट जाते हैं इस लिए मजबूरो की अवस्था में ज़ोहर व असर तथा मग़रिब व इशा की नमाज़ों का जमा करके पढ़ लेना वैध है, अधिक मजबूरी है तो पढ़ लो जमा करके परन्तु असल बात यही है कि अपने समय पर अदा की जाएँ नमाज़ें। अल्लाह तथा उसके बन्दों के अधिकारों में अत्याचार एवं अनर्थ न करो, अपने उत्तरदायित्वों को अति ईमानदारी के साथ निर्वाह करो।

अतएव इस्तिग़फ़ार एवं तौबा का तभी लाभ है जब मूल आदेशों को भी सामने रख कर सम्पूर्ण आज्ञा पालन किया जावे, नमाज़ों को अदा करने में नियमबद्धता हो, अल्लाह और बन्दों के हक़ की पूरी अदायगी हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यह मत कहो कि तौबा स्वीकार नहीं होती। याद रखो कि तुम अपने कर्मों के परिणाम से कभी बच नहीं सकते, सदैव फ़ज़्ल बचाता है न कि कर्म। फिर फ़रमाया- ऐ ख़ुदाए करीम व रहीम! हम सब पर कृपा कर कि हम तेरे बन्दे हैं तथा तेरे आसताने पर गिरे हैं। अल्लाह तआला हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआ का वारिस बनाए तथा हम तौबा एवं इस्तिग़फ़ार के वास्तविक अर्थ को समझते हुए इस्तिग़फ़ार के यथार्थ को समझत हुए इस्तिग़फ़ार व तौबा करने वाले हों।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने चार मृतकों तथा उनकी जमाअती सेवाओं का वर्णन फ़रमाया और नमाज़ के बाद उन मृतकों के जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ نَحۡمَدُهٗ وَنَسۡتَعِيۡنُهٗ وَنَسۡتَغۡفِرُهٗ وَنُؤۡمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيۡهِ وَنَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنۡ شُرُوۡرِ اَنۡفُسِنَا وَمِنۡ سَيِّئَاتِ اَعۡمَالِنَا
مَنۡ يَّهۡدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنۡ يُّضۡلِلۡهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشۡهَدُ اَنۡ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحۡدَهٗ لَا شَرِيۡكَ لَهٗ وَاَشۡهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبۡدُهٗ
وَرَسُوۡلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاۡمُرُ بِالۡعَدۡلِ وَالۡاِحۡسَانِ وَاِيۡتَآءِ ذِي الۡقُرۡبٰى وَيَنۡهٰى عَنِ الۡفَحۡشَآءِ وَالۡمُنۡكَرِ وَالۡبَغۡيِ
يَعِظُكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَذَكَّرُوۡنَ فَاذۡكُرُوا اللّٰهَ يَذۡكُرۡكُمۡ وَادۡعُوۡهُ يَسۡتَجِبۡ لَكُمۡ وَلَذِكۡرُ اللّٰهِ اَكۡبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131